12. होली

विचार-बिंदु– • मस्ती का त्योहार होली • प्रह्लाद और होलिका का प्रसंग • होली मनाने के ढंग • गुलाल और रंगों का खेल • मस्ती ही मस्ती • दोष

भारत उत्सवों का देश है। होली सबसे अधिक रंगीन और मस्त उत्सव है। भारतवर्ष में इस दिन सभी लोग छोटे-बड़े, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, ग्रामीण-शहरी का भेद भुलाकर एक-दूसरे के गले मिलते हैं तथा परस्पर गुलाल मलते हैं। होली के मूल में हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रह्लाद और होलिका का प्रसंग आता है। हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को मार डालने के लिए होलिका को नियुक्त किया था। वहाँ दैवीय चमत्कार हुआ। होलिका आग में जलकर भस्म हो गई परंतु विष्णुभक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका न हुआ। भक्त की विजय हुई, राक्षस की पराजय। होली वाले दिन लोग प्रातःकाल से दोपहर 12 बजे तक अपने हाथों में लाल, हरे, पीले रंगों का गुलाल लिए हुए परस्पर प्रेमभाव से गले मिलते हैं। इस दिन गली-मुहल्लों में ढोल-मजीरे बजते सुनाई देते हैं। लोग समूह-मंडलियों में मस्त होकर नाचते-गाते हैं। दोपहर तक सर्वत्र मस्ती छाई रहती है। कोई नीले-पीले वस्त्र किए घूमता है, तो कोई जोकर की मुद्रा में मस्त है। बच्चे पानी के रंगों में एक-दूसरे को नहलाने का आनंद लेते हैं। परिवारों में इस दिन लड़के-लड़कियाँ, बच्चे-बूढ़े, तरुण-तरुणियाँ सभी मस्त होते हैं। सचमुच इससे मस्त उत्सव ढूँढ़ना कठिन है।